

II-320

धर्मरत्न ब्रह्मचर्य सुरत श्री महाविहार

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीगणेशाय नमः

१५ गुन्ना नमः ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वं वं जाद क हूं स्वा हा ऊं अ ह्रिया नम
 ॐ ह्रिया पिना सर्व क थ ग क क थ हूं स्वा प यि थ्या मि ॐ ह्रिया द य न
 वा निसा ॥ ॐ आं सर्व थं के ग ब्रु रि थ क स थि थ हूं ॥ ॐ जी ४ स्वा हा
 ३ ॥ का र्थ वि ॐ धन स्वा हा ॥ ॐ सर्व विघ्नान् क दय हूं ॥ ॐ न मा र्ग
 ग वं ग पु थ क थु ना जा य न थ ग ना या हूं न स म्प्र क्कं वृ द्वा य न द्र थ ॥
 ॐ पु थ २ म हा पु थ स पु थ पु थ स क व पु थ वा व कि न न स्वा हा ॥ ॐ वि

नासि व ३

स्वा हा सि व ३

वृ जा ह ल स न र्ग न हा थ ३

न आ ब्रु थ हूं ह द य पि का य थु वि ॥ ॐ नि थ व ज्ज म्प्रा स न हूं ॥ रि
 पा पा न प न य हूं ॥ ॐ नि ध वि व जि नी म हा य नि स व न र्ग २ मी स थ
 स स्वा नां वि हूं हूं २ स्वा हा ॥ ॐ व ज्ज नि व क रू प न स्वा हा ॥ ॐ व ज्ज
 द क हूं ॥ ॐ व ज्ज ग म य हूं ॥ ॐ व ज्ज रू म स्र व थ स व क थ ग क अ धि
 स्त ना धि नि हूं २ स्वा हा ॥ दानं ग म य मं वृ ना वा सि नं स हि नं व स म
 ता क स र्ग न र्ग व थ प कि थ पि हा २ ह ना ग र

स्वा न र्ग ३

येनं क्कानि क्कं पि पि वि कान यन यं वी र्यं कियं क्कपनं ध्यानं क्कनं
मक विरु क नं प्र क्क सु व वा जा लो य ना या न मि ना प्र द व न र कि
रु त्वा मु नि म धु लं र व रु क न क व र्धु स व र ग वि नि र्मु क्क सु व म नू ज
वि सि र्ग व ड व दि कि कानि धन क न क स मृ धि जा य न वा ज व स स
ग र व न र रु सि का य क र्मा नि रु त्वा सु र व न स र्व क थ ग र अ धि

रु ना धि नि र्गु त्वा हा उ व ड क्क वि म न र्वा हा उ व ड स र्व स र्व वि घ्ना न
रु द य र्क उ स र्व र्धु धा व थ र्वा हा उ ह म हा म धा म नू र्वा न म ॥ उं जी ४
म धा म नू र्वा न म ॥ उं स र्व र्धु धा म नू र्वा न म ॥ द थ स ॥ उं यं प र्व वि हा धा व
य न म ॥ उं वं ड वा धि पा य न म ॥ उं व मृ प न र म दा व वि या य न म ॥ उं
वं ४ उ र व गु र्वा य न म ॥ उं या ड प दि पा य न म ॥ वा ड प दि पा य न म ॥ ३
उं ता ड प दि पा य न म ॥ उं उ म ड दि पा य न म ॥ उं य ग ज न त्वा य न म ॥
य १

ॐ लम्बुस्ववलायनमः॥ ॐ लम्बुपूरुववलायनमः॥ ॐ वम्बुवलायनमः॥ ॐ
 यास्ववलायनमः॥ ॐ वावकुवलायनमः॥ ॐ लामनिवलायनमः॥ ॐ
 आसर्वनिधमनिह्यनमः॥ ॐ वं वलायनमः॥ ॐ सुं सुं यायनमः॥ ॐ आ
 ॐ वीवजगुवृक्षनमः॥ ॐ वजपृथस्वाहा॥ ॐ वजगन्धस्वाहा॥ ॐ वजध
 पस्वाहा॥ ॐ वजदिपस्वाहा॥ ॐ वजनेपस्वाहा॥ ॐ वजवायस्वाहा॥ ॐ
 ॐ स्वाहावज॥ ॐ स्वाहायस्वाहावजसत्संगानवजवत्समनूतवजधः

ॐ वजवीनहं वरुवैस्वाहा ॐ वजमृदं गज्जो ॐ वजमृ

मग्नयनिवजकर्मरुलोहवडं किंजकुं ३ रुकिनाजमृजायां दर्शय ॥ ॐ
 डादयामहावीवा लोकपालामरुद्विका कीलर्युदधकार विप्रह
 मां नमस्तुते ॥ विद्यानेवद्विं विं दिवसकनधमा वास्यवा विंदुं वरुं मे प्रिय
 वानवृषं विह्वलनं ह्वानवृषं निरुति निवसिवनतनुं मंशुधा घं वमं शुं यमहि
 गंदं वृषं निरुतनवपूषं वजीनं हीमनादं विह्वलनं ह्वानवृषं निरुति रुव
 यं यं व मूर्तिनमामि ॥ वजुनहं मयं मन्मसु दिवापसाहितं नानावहं स

पाकि सुंदर नूतन दायिना ॥ गुणवत्तम धर्मस्य संघस्य अथैव वनिर्भूतया
 मितावन संघर्ष न तम ७ व ॥ ॐ आ ४ हं धीमहि वरुणस्य वरुणव न
 कमलाय संविहानाव तासन कनायेन मरु नम रु ३ नमानम
 रुह्य रु ३ त्वानमस्यामि शुभनाथं प्रसिधम ॥ यस्य प्रसाद कि वन
 सुविता रुमरु त्वे न त्वे प्रसापति कन पु रु नीधका नाप स्य गुना विन
 दलो स ध्व विना सुप्र ध्व रस्मिन्नमस्तुति त्रियं गुन तासन कनायेन

मरु ॥ नमा द्वाय नमा धर्माय नमस्तं प्राय मरु कम विख्यापि सु
 रग नमा सर्व वृद्धनमस्यामि धर्म ३ दिन मा मिर्ग संघं व सिन स
 पन्नं न त्वय नमा रुम ॥ न त्वय म स वन सर्वै पति दी सा मय अ न
 मा दिज ग लू ३ वृद्ध व ॥ धी द धम म आ वा ॥ धी स न नै या मि वृद्ध ध
 ० म ग मा रु म वा मि निरु क ना मय स्वप ना थ प मि द्य ॥ ३ त्या न या
 मि व न म व न वा मि निरु नि म रु या मि अ रु सर्व स त्या ३ ३ ३ वि द्य

वनवाभिविहं वृद्धावयं जगतादिनाय ॥ दहनीं सर्वपापानां पु
 त्थानीं वानुभादनीं कृणोत पासं वनिष्ठा मिश्रा पातांगं पापममय
 वावेलमृदुनजुक्तिं वित्यापमागमत्य किर्यावदसामं यथ किर्य
 वद्यमववतदहयं दसयोममनाथनामगगहिनीं कृणोति ३
 ४ खरुवगपुनियेयपुन ४ पुन ॥ अथ मलययननपुति गृह्णतु ना
 यकानरुदकमिदं नाथनकवतवपुनमया ४ यथा कथमगताया

रुतसम्यक् वृद्धाया वृद्धा नन वृद्धवद्वर्मा जानकिप्रस्यक्तिरुत
 सनमूर्तयज्जानिकं यत्रिकार्यं जस्ररावज्जववद्वर्नया दहं यय
 धम्मगयासं विप्रगतथा हं मनुभादयं अकं रुजानकिरुत
 लमूर्तनिरुमनुरुगाया सम्यक् वा अकं अहं यत्रिनामया मित
 गथममाननसमानुकारं नाक इव वसुधादयं ३ रुत ३ रुत ३

सदा सुसक्तिरुमयकासं वयं धेवरा नृदृष्टुमानस्य निमागता वा
एषु कथं आगमूनागता वा सवेषका मंडगनादिनाय कृष्णमिश्र
हंसखसंहिताया ॥ ॥ इति आचमनं पुनिष्ठ स्त्रोहा ॥ नारायणका
नवायुमधुनं नको वक्ष्यमिमुत्तं नारायणविग्रिमू उक्तं निकाया
सिद्धप्रपदां जननकाका निपाविशु निरुद्धं वां आदिखं नं नो मां पां
नो वं कावजा नयश्च मृत्तयश्च पविदिपश्च ॥ पुनर्देवका नवउ मउ नात

जातस्य रुवयस्य निरदहादिगनाकगानां सफविनसमूहस्य यामृत
मानियप्रवनाह क्रासाकपावमूडां दर्शयत् ॥ ॥ इति आचमनं पुनिष्ठ स्त्रोहा ॥
यमाय स्वाहा ॥ इव वृनाय स्वाहा ॥ इव वनाय स्वाहा ॥ इव प्रय स्वाहा
इनेमय स्वाहा ॥ इवायुव स्वाहा ॥ इव मानाय स्वाहा ॥ इव योग हा धिय
नय स्वाहा ॥ इव दानरुगा धिय नय स्वाहा ॥ इव वृक्ष नय स्वाहा ॥ ना
ग स्वाहा ॥ इव रुखा स्वाहा ॥ इव सूर्य स्वाहा ॥ इव सर्वदिग विदिग्

शुभानसंयुक्तामिच्छामहे ॥ वृत्तालपनसा ॥ ५० ॥ अथर्वनपिपिपातसु ॥ ५१ ॥ संखनरा
 ॥ ५२ ॥ वसुधनीपिपिपलसु ॥ ५३ ॥ लाक्षातिमसु ॥ ५४ ॥ धनकाप्रसात
 ॥ ५५ ॥ नमो भगवते ॥ ५६ ॥ नमो भगवते ॥ ५७ ॥ नमो भगवते ॥ ५८ ॥ नमो भगवते ॥ ५९ ॥ नमो भगवते ॥ ६० ॥ नमो भगवते ॥ ६१ ॥ नमो भगवते ॥ ६२ ॥ नमो भगवते ॥ ६३ ॥ नमो भगवते ॥ ६४ ॥ नमो भगवते ॥ ६५ ॥ नमो भगवते ॥ ६६ ॥ नमो भगवते ॥ ६७ ॥ नमो भगवते ॥ ६८ ॥ नमो भगवते ॥ ६९ ॥ नमो भगवते ॥ ७० ॥ नमो भगवते ॥ ७१ ॥ नमो भगवते ॥ ७२ ॥ नमो भगवते ॥ ७३ ॥ नमो भगवते ॥ ७४ ॥ नमो भगवते ॥ ७५ ॥ नमो भगवते ॥ ७६ ॥ नमो भगवते ॥ ७७ ॥ नमो भगवते ॥ ७८ ॥ नमो भगवते ॥ ७९ ॥ नमो भगवते ॥ ८० ॥ नमो भगवते ॥ ८१ ॥ नमो भगवते ॥ ८२ ॥ नमो भगवते ॥ ८३ ॥ नमो भगवते ॥ ८४ ॥ नमो भगवते ॥ ८५ ॥ नमो भगवते ॥ ८६ ॥ नमो भगवते ॥ ८७ ॥ नमो भगवते ॥ ८८ ॥ नमो भगवते ॥ ८९ ॥ नमो भगवते ॥ ९० ॥ नमो भगवते ॥ ९१ ॥ नमो भगवते ॥ ९२ ॥ नमो भगवते ॥ ९३ ॥ नमो भगवते ॥ ९४ ॥ नमो भगवते ॥ ९५ ॥ नमो भगवते ॥ ९६ ॥ नमो भगवते ॥ ९७ ॥ नमो भगवते ॥ ९८ ॥ नमो भगवते ॥ ९९ ॥ नमो भगवते ॥ १०० ॥ नमो भगवते ॥

पविमितपूषा अपविमितायूषा ह्यनसंज्ञाया पश्चिम स्वभाहं ॥ संख ॥ ६८ क कनि
२ भावनि २ मिवावनि २ प्रगिरुत रुत सर्वक माववनवि ॥ ६९ धन स्वभाहं ॥ ६९ ॥ ६९ अ
माघापतिरुत रुत २ सर्वक माववनवि ॥ ७० धन स्वभाहं ॥ ७० ॥ ७० अ
॥ ७१ ॥ ७१ धन स्वभाहं ॥ ७१ ॥ ७१ अ
॥ ७२ ॥ ७२ धन स्वभाहं ॥ ७२ ॥ ७२ अ
॥ ७३ ॥ ७३ धन स्वभाहं ॥ ७३ ॥ ७३ अ
॥ ७४ ॥ ७४ धन स्वभाहं ॥ ७४ ॥ ७४ अ
॥ ७५ ॥ ७५ धन स्वभाहं ॥ ७५ ॥ ७५ अ
॥ ७६ ॥ ७६ धन स्वभाहं ॥ ७६ ॥ ७६ अ
॥ ७७ ॥ ७७ धन स्वभाहं ॥ ७७ ॥ ७७ अ
॥ ७८ ॥ ७८ धन स्वभाहं ॥ ७८ ॥ ७८ अ
॥ ७९ ॥ ७९ धन स्वभाहं ॥ ७९ ॥ ७९ अ
॥ ८० ॥ ८० धन स्वभाहं ॥ ८० ॥ ८० अ

३ सर्वपूजाप्रपूषकवृक्षानांगुनवर्णिनां ३

शादि॥ ५॥ ईं स्वध्वगतायुयं मृदमास्यनमासिनां गता आकाशतः सर्वदेवतादिनि
 ४ तगवतामुपवर्तिनां कर्षणादवाना गमसूत्रायकागधर्वाधमहावासरूतापनापि
 ६॥ आद्यासर्वनागपूडयैर्ह्यं अहावृक्ष २ साधवृक्षकृता रुमसर्वदुर्गतिघनिसंक्षेपः
 ७॥ सत्त्वा नांवाधिप्राप्यननव कपुनतिर्यक् मन्त्रादिद्यायूखापनामिधधकवृक्ष
 ८॥ आंतामंसुर्निर्गोतिपाफ ॥ कृष्णपुष्पिकास्त्राय ॥ धनकृष्णपुष्पिकाः गममागं मन्त्रं स्थान
 ९॥ केशनसंहावना ॥ ज्ञानयातक ॥ पूर्ववत्वायन ॥ ईं सर्ववीनूवज्रधूप ॥ ६॥ धूप

कलममरुमोदरुन हयं उरुपीनायापार्जनिस्य कावहीनज विकल जिह्वं सर्व
 धातु कनिवागिनानी सवत्राननानी सर्वपुतानां रुपीनानी विकलापि शुं मार्गर्षु
 धाधनायखानका कपिधुं मयका मिस्रधुं ॥ खज अगलाननव ॥ जजमका अ
 रुलिजडा मंकी ॥ धनमावां शदचकं वाक् ॥ उं ख ३ नखधुं ॥ उं हि नरनख
 धुं ॥ धनलं खनि स्या ॥ इयर्थं न पूर्ववत्वाक् नमानयानक ॥ पूर्ववत्वाक् न
 पूजाया ॥ धममा स्यादि ॥ अकारम ॥ दकि धाकि ॥ धनमासका आपवापय
 य

नंका नकि यया ॥ दकि धाका ॥ धनम उलथिल किश्वलनिन समाकन ॥ अ
 निर्वादा ॥ धनि इह आदिर्न लखसमन ॥ धनगु नुवे सखन इवकं जजमानं सलि
 डासवाद लखेन दुयका ॥ वाक् ॥ उं जावका जाक् सर्वसत्संगुहन सीजावा
 अदकजावा संखनजावा आयपाइकावा इजिनावा अरुपिनावा संगि
 नावा असंगिनावा नवसंगिनावा नामसंगिनावा सर्वनसत्वापया हापुजा
 मकपदा पुनिष्ठापयितया उं यम २ महायधयमग रु दिवंगत म्मकना

[illegible][illegible]

मम समय सर्व महानां नद विरुयं वाधि विजु न प्रामुत र्गं विरुयं ॥
१६ गोखं जौ नो वज्र सत्वस्य सर्वपाप विघ्न मान रुति क न र्गं रुत स्वाहा ॥
॥ अका पका ॥ ६ गोखं जौ नो वज्र सत्वस्य सर्वपाप विघ्न मान रुति क न र्गं रुत स्वाहा ॥
॥ तान लख ॥ ६ गोखं जौ नो वज्र सत्वस्य सर्वपाप विघ्न मान रुति क न र्गं रुत स्वाहा ॥
॥ जाग्रत ॥ ६ गोखं जौ नो वज्र सत्वस्य सर्वपाप विघ्न मान रुति क न र्गं रुत स्वाहा ॥
॥ अका पका ॥ ६ गोखं जौ नो वज्र सत्वस्य सर्वपाप विघ्न मान रुति क न र्गं रुत स्वाहा ॥

स्वाहा ॥ वलि ॥ ६ गोखं जौ नो वज्र सत्वस्य सर्वपाप विघ्न मान रुति क न र्गं रुत स्वाहा ॥
॥ वज्रा मृता दक ०० ॥ ६ गोखं जौ नो वज्र सत्वस्य सर्वपाप विघ्न मान रुति क न र्गं रुत स्वाहा ॥
॥ अका पका ॥ ६ गोखं जौ नो वज्र सत्वस्य सर्वपाप विघ्न मान रुति क न र्गं रुत स्वाहा ॥
॥ वज्रा मृता दक ०० ॥ ६ गोखं जौ नो वज्र सत्वस्य सर्वपाप विघ्न मान रुति क न र्गं रुत स्वाहा ॥

१७ अथ मन्त्रं स्रुतं जन्मं स्रुतं त्रिविधं वसु सप्तयसर्वदवानां त्रिविधा हन
संस्तव्यं अथैव हि कुरु विद्यानि वाधिविरुक्तेषु नसा गन्तव्यं लावति सप्ता
नृक्षेन संस्तव्यं अथ मन्त्रं दिवसं कुरु कुरु मन्त्रं कुरु मन्त्रं सन्निपातं कुरु मन्त्रं
ग. सर्वं वृद्धं निर्मलना ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
या पारंगुथी या पिंडयज्ञेना दक्षिणेना १२ का नापातं १३ पंक्तिं का नापातं
क १ कं वा १ गुण १ गुथि ज न संसर्गं इन १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥

१ तमः कृष्णसिद्धायः ॥ श्री चक्रं यत्कुरुते ॥ ॐ श्री गुरुं नमस्कृत्य गतसुखं प्रयस्य सर्वदुर्गति-

[illegible]

कृणुमस्ति तां विष्णु कर्म कला ऊखो नो नौ दूयं तयः ॥ नमस्तु गौरी श्रीम गुरुभ्यः
कमलारय य सर्व सल्लेषु समवीरु कवीध तिष्ठ नमस्तु गौरी श्रीम सिंताम निरुद्ध